प्रधानमंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : आदरणीय अध्यक्ष महोदया जी, माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर उन्हें आभार व्यक्त करने के लिए मैं सदन में आपके बीच आभार प्रस्ताव का समर्थन करते हुए, कुछ बातें जरूर कहना चाहूँगा। ....(व्यवधान)

कल सदन में राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर कई माननीय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। ....(व्यवधान) श्री मल्लिकार्जुन जी, श्री मो.सलीम जी, श्री विनोद कुमार जी, श्री टी. नरसिम्हन जी, श्री तारिक अनवर जी, श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा जी, श्री ए. अनवर राजा जी, श्री जयप्रकाश नारायण यादव जी, श्री कल्याण बनर्जी जी, श्री पी. वेणुगोपाल जी, श्री भर्तृहरि महताब जी, श्री आनन्दराव अड्सूल जी, श्री भारती मोहन जी समेत करीब 34 माननीय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किये। ...(व्यवधान) विस्तार से चर्चा हुई। किसी ने पक्ष में कहा, लेकिन एक सार्थक चर्चा इस सदन में हुई। राष्ट्रपति जी का अभिभाषण किसी दल का नहीं होता है....(व्यवधान) देश की आशा- आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का और उस दिशा में हो रहे कार्यों का एक आलेख होता है...(व्यवधान) उस दृष्टि से राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का सम्मान होना चाहिए। सिर्फ विरोध के लिए विरोध करना कितना उचित है?....(व्यवधान)

अध्यक्ष जी, हमारे देश में राज्यों की रचना आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने भी की थी। तीन नये राज्यों का निर्माण हुआ था। उन तीन राज्यों के निर्माण में, चाहे उत्तर प्रदेश में से उत्तराखण्ड बना हो, मध्य प्रदेश में से छत्तीसगढ़ बना हो, बिहार में से झारखण्ड बना हो। यह उस सरकार की दीर्घ दृष्टि थी कि किसी भी समस्या के बिना तीनों राज्यों का निर्माण हुआ और तीनों राज्यों के अलग होते ही, जो भी बंटवारा करना था तो बंटवारा, अफसरों के तबादले करने थे तो तबादले, सारी चीजें स्मूदली हुईं। ....(व्यवधान) नेतृत्व अगर दूरदृष्टा हो, राजनीतिक स्वार्थ की हड़बड़ाहट में निर्णय नहीं होते हों, तो कितने स्वस्थ निर्णय होते हैं, इसका उदाहरण अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तीन राज्यों के निर्माण के समय दिया था। उसको आज देश अनुभव कर रहा है।...(व्यवधान)

आपके चरित्र में है, जब आपने भारत का विभाजन किया, देश के टुकड़े किए....(व्यवधान) और जो जहर बोया, आज आजादी के 70 साल के बाद भी एक दिन ऐसा नहीं जाता है कि आपके उस पाप की सजा सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानी न भुगतते हों।......(व्यवधान) आपने देश के टुकडे किए, वह भी उस तरीके से किए, आपने चुनाव को ध्यान में रखते हुए हड़बड़ी में, संसद के दरवाजे बंद करके, सदन ऑर्डर में नहीं था, तब भी आंध्र के लोगों की भावनाओं का आदर किए बिना। तेलंगाना बनाने के पक्ष में हम भी थे। तेलंगाना आगे बढ़े, उसके पक्ष में आज भी हम हैं। लेकिन आंध्र के साथ उस दिन आपने जो बीज बोए, आपने चुनाव के लिए हड़बड़ी में जो किया, यह उसी का नतीजा है कि आज चार साल के बाद भी समस्याएं सुलगती रहती हैं…(व्यवधान)

इसलिए आप पर इस प्रकार की चीजें शोभा नहीं देती। अध्यक्ष महोदया, कल मैं कांग्रेस पार्टी के नेता श्रीमान मल्लिकार्जुन खड़गे जी का भाषण सुन रहा था। मैं यह समझ नहीं पा रहा था…(व्यवधान) कि वह ट्रेजरी बेंच को संबोधित कर रहे थे, यहां बैठे लोगों को संबोधित कर रहे थे या अपने ही दल के नीति-निर्धारकों को खुश करने का प्रयास कर रहे थे।...(व्यवधान) कल जब उन्होंने बशीर बद्र की शायरी से बात शुरू की, खड़गे जी ने बशीर बद्र जी की शायरी सुनायी। ...(व्यवधान) मैं आशा करता हूँ कि उन्होंने जो शायरी सुनायी है, वह कर्नाटक के मुख्य मंत्री महोदय ने जरूर सुनी होगी।...(व्यवधान) कल उन्होंने शायरी में कहा कि,

"दुश्मनी जमकर करो, लेकिन ये गुंजाइश रहे,
जब कभी हम दोस्त हो जाएं तो शर्मिंदा न हों।"…(व्यवधान)

मैं जरूर मानता हूँ कि कर्नाटक के मुख्य मंत्री जी ने आपकी यह गुहार सुन ली होगी…(व्यवधान) लेकिन श्रीमान खड़गे जी, जिस बशीर बद्र की शायरी का आपने जिक्र किया, अच्छा होता उस शायरी में आपने जो शब्द बोले उसके पहले वाली दो लाइन भी अगर याद कर लेते तो शायद इस देश को यह जरूर पता चलता कि आप कहां खड़े हैं। उसी शायरी में बशीर बद्र जी ने आगे कहा है कि,

"जी चाहता है कि सच बोलें, जी बहुत चाहता है

कि सच बोलें, क्या करें, हौसला नहीं होता।"…(व्यवधान)

मैं नहीं जानता कर्नाटक के चुनाव के बाद खड़गे जी सही जगह पर होंगे या नहीं होंगे... (व्यवधान) और इसलिए यह एक प्रकार से उनकी फेयरवेल स्पीच भी हो सकती है। ...(व्यवधान) आम तौर पर सदन में जब पहली बार कोई सदस्य बोलता है तो हर कोई सम्मान से उसकी बात सुनता है। उसी प्रकार से जो फेयरवेल की स्पीच होती है, वह भी करीब-करीब सम्मान से सुनी जाती है... (व्यवधान) अच्छा होता, कल कुछ माननीय सदस्यों ने संयम बरता होता और आदरणीय खड़गे जी की बात को उसी सम्मान के साथ सुना होता, जो लोकतंत्र के लिए बहुत आवश्यक है। विरोध करने का हक है, लेकिन सदन को मान लेने का हक नहीं है। ... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, मैं देख रहा हूँ कि जब भी हमारे विपक्ष के कुछ लोग हमारी किसी बात की आलोचना करने जाते हैं, तो तथ्य तो कम होते हैं, लेकिन हमारे जमाने मे ऐसा था, हमारे जमाने में ऐसा था, हमने ऐसा किया था, हम यह करते थे, ज़्यादातर उसी कैसेट को बजाया जाता है। लेकिन यह न भूलें कि भारत आज़ाद हुआ, उसके बाद भी जो देश आज़ाद हुए हैं वे हमसे भी तेज गति से काफी आगे बढ़ चुके हैं। ...(व्यवधान) हम नहीं बढ़ पाए, यह मानना पड़ेगा और आपने मां भारती के टुकड़े कर दिए। ...(व्यवधान) उसके बावजूद भी यह देश आपके साथ रहा था। ...(व्यवधान) आप उस जमाने में देश पर राज कर रहे थे, प्रारम्भिक तीन-चार दशक तक विपक्ष का एक प्रकार से नाममात्र का विपक्ष था। ...(व्यवधान) वह समय था, जब मीडिया का व्याप भी बहुत कम था और जो था वह भी ज़्यादातर देश का भला होगा, इस आशा से शासन के साथ चलता था। ...(व्यवधान)। रेडियो पूरी तरह आप ही के गीत गाता था। ...(व्यवधान) अन्य कोई स्वर वहाँ सुनाई नहीं देता था। ...(व्यवधान) बाद में जब टी. वी. आया, तो वह टी. वी. भी आप ही को पूरी तरह समर्पित था। ...(व्यवधान) उस समय न्यायपालिका में भी, ज्यूडिशियरी की टॉप पोजीशन पर भी नियुक्तियाँ कांग्रेस पार्टी करती थी। ...(व्यवधान) यह पार्टी के द्वारा तय होता था, यानि इतनी

लग्जरी आपको थी। ...(व्यवधान) उस समय कोर्ट में न कोई पीआईएल होती थी, न एनजीओज की ऐसी भरमार हुआ करती थी। ...(व्यवधान) आप जिन विचारों से पले-बढ़े हो, वैसा ही माहौल उस समय देश में आपको उपलब्ध था। ...(व्यवधान) विरोध का नामो-निशान नहीं था। ...(व्यवधान) पंचायत से पार्लियामेंट तक आप ही का झंडा फहर रहा था, लेकिन आपने पूरा समय एक परिवार के गीत गाने में खपा दिया।...(व्यवधान) देश के इतिहास को भुलाकर एक ही परिवार को देश याद रखे, सारी शक्ति उसी में लगाई। ...(व्यवधान) उस समय देश का जज़्बा, आज़ादी के बाद के दिन थे, देश को आगे ले जाने का जज़्बा था। ...(व्यवधान) आपनी कुछ ज़िम्मेदारी के साथ काम किया होता तो देश की जनता में यह सामर्थ्य था कि देश को कहाँ से कहाँ पहुंचा देते, लेकिन आप अपनी ही धुन बजाते रहे। ...(व्यवधान) यह मानना पड़ेगा कि आपने सही दिशा रखी होती, सही नीतियाँ बनाई होती, अगर नीयत साफ होती तो यह देश आज जहां है, उससे कई गुना आगे और अच्छा होता, इससे इंकार नहीं कर सकते हैं। (व्यवधान) यह देश का दुर्भाग्य रहा है कि कांग्रेस पार्टी के नेताओं को यही लगता है कि भारत नाम के देश का जन्म 15 अगस्त 1947 को हुआ था। ...(व्यवधान) जैसे इसके पहले यह देश था ही नहीं। ...(व्यवधान) कल मैं हैरान था, इसको मैं अहंकार कहूँ या नासमझी कहूँ या वर्षा ऋतु के समय अपनी कुर्सी बचाने का प्रयास कहूँ।जब यह कहा गया कि देश को नेहरू ने लोकतन्त्र दिया, देश को कांग्रेस ने लोकतंत्र दिया। ...(व्यवधान) अरे! खड़गे साहब, कुछ तो कम करो।

मैं जरा यह पूछना चाहता हूँ। आप लोकतंत्र की बात करते हैं। आप जब लोकतंत्र की बात करते हैं तो आपको पता होगा कि हमारे देश में जब लिच्छवी साम्राज्य था, जब बुद्ध परम्पराएं थीं, तब भी हमारे देश मे लोकतंत्र की गूंज थी। कांग्रेस और नेहरू जी ने लोकतंत्र नहीं दिया। बौद्ध संघ एक ऐसी व्यवस्था थी, जो चर्चा, विचार, विमर्श और वोटिंग के आधार पर निर्णय करने की प्रक्रिया चलाता था। ...(व्यवधान)

श्रीमान खड़गे जी, आप तो कर्नाटक से आते हैं। कम से कम एक परिवार की भक्ति करके, कर्नाटक के चुनाव के बाद शायद आपकी यहाँ बैठने की जगह बची रहे, लेकिन कम से कम जगदगुरु बस्वेश्वर जी का तो अपमान मत करो। आपको पता होना चाहिए, क्योंकि आप कर्नाटक से आते हैं, कि जगदगुरु बस्वेश्वर थे, जिन्होने उस जमाने मे 'अनुभव मंडपम' नाम की एक व्यवस्था दी। यह बारहवीं शताब्दी में थी। गांव के सारे निर्णय लोकतांत्रिक तारीक से होते थे, इतना ही नहीं, उस समय विमेन एमपावरमेंट का काम हुआ था कि उस सदन, उस सभा के अंदर महिलाओं का होना अनिवार्य हुआ करता था। यह जगदगुरु बस्वेशर जी के कालखंड में लोकतंत्र को प्रस्थापित करने का काम बारहवीं शताब्दी में इस देश में हुआ था। लोकतंत्र हमारी रगों में हैं, हमारी परंपरा में है। ...(व्यवधान)

इतिहास गवाह है को बिहार में लिच्छवी साम्राज्य के समय हमारे यहाँ किस प्रकार की व्यवस्था थी। ...(व्यवधान) अगर हम प्राचीन इतिहास पर गौर करें तो हमारे यहाँ आज से ढाई हज़ार साल पहले गणराज्य की व्यवस्था हुआ करती थी। यह भी लोकतंत्र की परंपरा थी। सहमति-असहमति को हमारे यहाँ मान्यता थी।

आप लोकतंत्र की बात करते हैं? श्रीमान् मनमोहन सिंह की सरकार में मंत्री रहे हुए और आप ही की पार्टी के नेता, उन्होने अभी-अभी, जब आपकी पार्टी के भीतर चुनाव चल रहा था, तो उन्होने मीडिया को क्या कहा था? उन्होने कहा था- "जहांगीर की जगह पर शाहजहाँ आए, शाहजहाँ की जगह पर औरंगजेब आए। क्या वहाँ चुनाव हुआ था, तो हमारे यहाँ भी आ गए"। आप लोकतंत्र की बात करते हैं?

मैं जरा पूछना चाहता हूँ कि आप कौन से लोकतंत्र की चर्चा करते हैं, जब आपके एक पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमान राजीव गांधी, हैदराबाद के एयरपोर्ट पर उतरते हैं, वहाँ आप ही के पार्टी के चुने हुए एक मुख्य मंत्री, शैड्यूल्ड कास्ट के मुख्य मंत्री उन्हें एयरपोर्ट पर रिसीव करने आए थे।...(व्यवधान) लोकतंत्र में विश्वास की बातें करने वाले आप लोग जिस नेहरू जी के नाम पर

लोकतंत्र की सारी परंपरा को समर्पित कर रहे हैं, उसी परंपरा में श्रीमान राजीव गांधी ने हैदराबाद एयरपोर्ट पर उतर कर एक दलित मुख्य मंत्री को, एक चुने हुए जन प्रतिनिधि को खुले आम अपमानित किया था। ...(व्यवधान)

श्री टी. अन्जैया का अपमान किया। ...(व्यवधान) आप लोकतंत्र की बात करते हो, जब आप लोकतंत्र की चर्चा करते हों, तब सवाल यह उठता हैं, यह तेलुगू देशम पार्टी और श्री एन.टी. रामाराव उस अपमान की आग में से पैदा हुए थे। ...(व्यवधान) इस अपमान की आग में से पैदा हुए थे। श्री टी. अन्जैया का अपमान हुआ, उनका सम्मान करने के लिए श्री रामाराव को अपना फिल्म क्षेत्र छोड़कर आंध्र प्रदेश की जनता की सेवा के लिए मैदान में आना पड़ा।...(व्यवधान) आप लोकतंत्र की बात समझा रहे हो। इस देश में 90 से अधिक बार धारा 356 का दुरुपयोग करते हुए राज्य सरकारों को, उन राज्यों में उभरती हुई पाटियों को आपने उखाड़ कर फेंक दिया।...(व्यवधान) आपने पंजाब में अकाली दल के साथ क्या किया, आपने तमिलनाडु में क्या किया, आपने केरल में क्या किया, इस देश के लोकतंत्र को आपने पनपने नहीं दिया।...(व्यवधान) आप अपने परिवार के लोकतंत्र को ही लोकतंत्र मानते हो और देश को गुमराह कर रहे हो।........(व्यवधान)

इतना ही नहीं, कांग्रेस पार्टी का लोकतंत्र...(व्यवधान) जब आत्मा की आवाज उठती है, तो उनका लोकतंत्र दबोच जाता है।........(व्यवधान) आप जानते हैं कि कांग्रेस पार्टी ने राष्ट्रपति के रुप में श्री नीलम संजीव रेड्डी को पसंद किया था और रातों-रात उनके पीठ में छुरा भोंक दिया गया और अधिकृत उम्मीदवार को पराजित कर दिया गया।...(व्यवधान) आप इत्तेफाक से यह भी देखिए, ये भी आंध्र प्रदेश से आते थे। आपने श्री टी. अन्जैया के साथ अपमान किया, श्री नीलम संजीव रेड्डी के साथ अपमान किया।...(व्यवधान) आप लोकतंत्र की बात बताते हो। इतना ही नहीं, डॉ. मनमोहन सिहं जी देश के प्रधान मंत्री थे, कैबिनेट में निर्णय किया, लोकतंत्र की एक महत्वपूर्ण संस्था, संविधान के द्वारा बनी हुई संस्था, आपकी ही पार्टी की सरकार और आपके पार्टी के एक

पदाधिकारी पत्रकार वार्ता बुलाकर कैबिनेट के निर्णय को प्रेस के सामने टुकड़े कर दें।........(व्यवधान) आपके मुंह में लोकतंत्र शोभा नहीं देता है। इसलिए, कृपा करके आप हमें लोकतंत्र का पाठ मत पढ़ाइए।........(व्यवधान)

मैं जरा एक इतिहास की बात बताना चाहता हूं।...(व्यवधान) जब देश में कांग्रेस का नेतृत्व करने के लिए चुनाव हुआ, तो उस समय पंद्रह कांग्रेस कमेटियाँ थी, उसमें से बारह कांग्रेस कमेटियों ने सरदार वल्लभ भाई पटेल को चुना था और तीन लोगों ने नोटा किया था।...(व्यवधान) किसी को भी वोट नहीं देने का निर्णय किया था, उसके बावजूद भी नेतृत्व सरदार वल्लभ भाई पटेल को नहीं दिया गया, वह कौन सा लोकतंत्र था।...(व्यवधान) पंडित नेहरु जी को बैठा दिया गया, अगर देश के पहले प्रधान मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल होते, तो मेरे कश्मीर का यह हिस्सा आज पाकिस्तान के पास नहीं होता।...(व्यवधान)

अभी दिसंबर में कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष का चुनाव था कि ताजपोशी थी। ...(व्यवधान) आप ही के पार्टी के एक नौजवान ने आवाज उठाई। वह अपना उम्मीदवारी पत्र भरना चाहता था।...(व्यवधान) आपने उसको भी रोक दिया। ...(व्यवधान) आप लोकतंत्र की बातें करते हैं।...(व्यवधान) मैं जानता हूं कि यह आवाज दबाने के लिए इतनी कोशिश नाकाम रहने वाली है।...(व्यवधान) सुनने की हिम्मत चाहिए।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, हमारी सरकार की विशेषता है, हम ऐसे वर्क कल्चर को लाए हैं, जिस वर्क कल्चर में सिर्फ घोषणाएं करके अखबार की सुर्खियों में छा जाना, सिर्फ योजनाएं घोषित करके जनता की आंख में धूल झोंक देना, यह हमारा कल्चर नहीं है।...(व्यवधान) हम उन चीजों को हाथ लगाते हैं, जिसको पूरा करने का प्रयास करते हैं और जो अच्छी चीजें हैं, वे किसी भी सरकार की किसी की भी क्यों न हो, अगर वह अटकी है, देश को नुकसान हो रहा है तो उसे ठीक-ठाक करके पूरा करने का प्रयास करते हैं।...(व्यवधान) क्योंकि लोकतंत्र में सरकारें आती-जाती हैं, देश बना रहता है और उस सिद्धांत को हम मानने वाले हैं।...(व्यवधान)

क्या यह सच नहीं है, यही मुलाजिम, यही फाइलें, यही कार्यशैली और क्या कारण था कि पिछली सरकार में हर रोज 11 किलोमीटर नेशनल हाईवे बनते थे, आज एक दिन में 22 किलोमीटर नेशनल बन रहे हैं।...(व्यवधान) रोड आप बनाते हैं, रोड हम भी बनाते हैं।...(व्यवधान) पिछली सरकार के आखरी 3 सालों में 80 हजार किलोमीटर सड़कें बनीं। हमारी सरकार के 3 साल में 1 लाख 20 हजार किलोमीटर सड़कें बनीं ।...(व्यवधान) पिछली सरकार के आखिरी 3 वर्षों में 1,100 किलोमीटर रेल लाइन का निमार्ण हुआ ।...(व्यवधान) सरकार के इन तीन वर्षों में 2,100 किलामीटर रेल लाइन का निर्माण हुआ।....(व्यवधान) पिछली सरकार के आखिरी 3 वर्षों में 2 ,500 किलोमीटर रेल लाइन का बिजलीकरण हुआ, इस सरकार के 3 सालों में 4 ,300 किलोमीटर से ज्यादा का काम हुआ ।...(व्यवधान)

2011 के बाद पिछली सरकार में 2014 तक आप, फिर कहेंगे यह योजना हमारी थी, यह कल्पना हमारी थी, इसकी क्रेडिट हमारी है, गीत गाएंगे ।...(व्यवधान) सच्चाई क्या है?…(व्यवधान) आप्टिकल फाइबर नेटवर्क, आपके कार्य करने के तरीके क्या थे?...(व्यवधान) जब तक रिश्तेदारों का मेल न बैठै, यार-अपनों का मेल न बैठै, गाड़ी आगे चलती नहीं थी।...(व्यवधान) 2011 के बाद से 2014 तक आपने सिर्फ 59 पंचायतों में आप्टिकल फाइबर पहुंचाया । हमने आने के बाद इतने कम समय में 1 लाख से अधिक पंचायतों में आप्टिकल फाइबर नेटवर्क पहुंचा दिया। कहां 3 साल में 60 से भी कम गांव और कहां 3 साल में 1 लाख से ज्यादा गांव । कोई हिसाब ही नहीं है जी ।....(व्यवधान)

इसलिए, पिछली सरकार ने शहरी आवास योजना 939 शहरों में लागू की थी, आज प्रधान मंत्री आवास योजना 4320 शहरों में लागू है। आप 1000 से भी कम और हम 4000 से भी ज्यादा किए हैं। पिछली सरकार के आखिरी तीन वर्षों में कुल 12000 मेगावाट रिन्युएबल इनर्जी की नई क्षमता जोड़ी गई, इस सरकार ने तीन सालों में 22,000 मेगावाट से भी ज्यादा क्षमता जोड़ी। शिपिंग इंडस्ट्री और कार्गो हैंडलिंग में आपके समय निगेटिव ग्रोथ था। इस सरकार ने तीन साल में

11 प्रतिशत से ज्यादा ग्रोथ करके दिखाया है। अगर आप जमीन से जुड़े होते तो शायद आपकी यह हालत न हुई होती। मुझे अच्छा लगा, हमारे खड़गे जी ने दो चीजें कहीं, एक रेलवे और दूसरा कर्नाटक। खड़गे जी का सीना फूल जाता है। आपने बीदर-कलबुर्गी रेल लाइन का जिक्र किया।

देश को इस सच्चाई का पता होना चाहिए, यह बात कांग्रेस के मुंह से कभी किसी ने सुनी नहीं होगी, कभी नहीं बोला होगा, उदघाटन समारोह में भी नहीं बोले होंगे, शिलान्यास में भी नहीं बोले होंगे, सत्य को स्वीकार कीजिए। बीदर-कलबुर्गी की नई रेल लाईन का प्राजेक्ट अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार में मंजूर हुआ था। वर्ष 2013 तक आपकी सरकार रही, आप स्वयं रेल मंत्री रहे। यह आपके ही पार्लियामेंटरी कान्स्टीटुएंसी का इलाका है। उसके बावजूद भी, इतने सालों बाद भी, अटल जी की सरकार के कितने साल हुए, सिर्फ 37 किलोमीटर का काम हुआ। वह काम भी तब हुआ, जब येदुरप्पा जी मुख्य्य मंत्री थे। उन्होंने इनिशिएटिव लिया। भारत सरकार ने जो मांगा, उसे देने के लिए सहमति दे दी। तब जाकर सरकार ने अटल जी के सपने को आगे बढ़ाने का काम किया। जब चुनाव आया, तो आपको लगा कि रेल चल पड़े तो अच्छा होगा। 110 किलोमीटर होना था, 37 किलोमीटर पर ही झंडी फहरा कर आ गए। हमने आकर इतने कम समय में 73 किलोमीटर का शेष काम पूरा किया। हमने नहीं सोचा कि यह विपक्ष के नेता का संसदीय क्षेत्र की इलाका है, इसको अभी गडढ़े में डालो, बाद में देखा जाएगा। ऐसा पाप हम नहीं करते। यह इलाका आपका था लेकिन काम देश का था, हमने इसे देश का काम मान कर पूरा किया। उस पूरी योजना का लोकार्पण मैंने किया, तो भी आपको दर्द हो रहा है। इस दर्द की दवा देश की जनता ने पहले कर दी है।

अध्यक्ष महोदया, दूसरी चर्चा बाड़मेर रिफायनरी की कर रहे हैं। विजय प्राप्त करने के लिए चुनाव के पहले पत्थर पर नाम जड़ जाएगा, तो गाड़ी चल जाएगी। आपने बाड़मेर रिफायनरी में जाकर पत्थर जड़ दिए, नाम लिखवा दिया। जब हम आकर कागजात देखें, तो रिफायनरी को जो शिलान्यास हुआ था वह सारा कुछ कागज पर था। न जमीन की मंजूरी थी, न जमीन थी, न भारत

सरकार के साथ कोई फाइनल एग्रीमेंट था । चुनाव को ध्यान में रखते हुए आपने वहां भी पत्थर जड़ दिया। आपकी गलतियों को ठीक करते, उस योजना को सही स्वरूप देने में भारत सरकार और राजस्थान सरकार को इतनी माथापच्ची करनी पड़ी, तब बड़ी मुश्किल से इसे निकाल पाए और अब उस काम को प्रारंभ कर दिया है ।

जब हमने ढोला-सदिया ब्रिज उदघाटन किया तो कुछ लोगों को तकलीफ हो गई और कह दिया कि यह तो हमारा है, बड़ा आसान है। यह कभी नहीं बोले हैं, जब उस का काम आगे बढ़ रहा था, तब इस सदन में सवाल उठे, कभी यह कहने की ईमानदारी नहीं दिखाई कि यह काम भी अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार में निर्णित हुआ था। वह भी हमारे बीजेपी के एक विधायक ने विस्तार से अध्ययन करके मांग की थी और माननीय अटल जी ने उस मांग को माना था और उसमें से यह बना था । 2014 में हमारी सरकार बनने के बाद नॉर्थ ईस्ट, उत्तर पूर्व के इलाकों को प्राथमिकता दी और उसे तेज गति से आगे बढ़ाने का काम हमने किया और तब जाकर वह ब्रिज बना । ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षा जी, इतना ही नहीं, मैं गर्व से कह सकता हूँ, देश में आज सबसे लंबी सुरंग, सबसे लंबी गैस पाईप लाइन, सबसे लंबा समुद्र के अंदर ब्रिज, सबसे तेज ट्रेन, सारे निर्णय यही सरकार कर सकती है और समय सीमा में आगे बढ़ा रही है। इसी काल खंड में 104 सैटेलाइट छोडने का कार्य भी हो रहा है ।...(व्यवधान)

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है जिसका उल्लेख महामहिम राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में किया है। मैं कहना चाहता हूँ कि लोकतंत्र कैसा होता है। शासन में रहे हुए हर एक का सम्मान कैसा होता है। लालकिले से दिया भाषण निकाल दीजिए, आजादी के बाद के कांग्रेस के नेताओं के लालकिले से भाषण निकाल लीजिए । एक भाषण में किसी ने यह कहा हो कि देश में जो प्रगति हो रही है उसमें सभी सरकारों को योगदान है, भूतपूर्व सरकारों को योगदान है, ऐसा कोई एक वाक्य लालकिले से कांग्रेस के नेताओं ने बोला हो तो ज़रा इतिहास खोलकर ले

आइए। यह नरेन्द्र मोदी लालकिले से कहता है कि देश आज जहाँ है, पुरानी सभी सरकारों का भी योगदान है, राज्य सरकारों का भी योगदान है और देशवासियों का योगदान है। हमारी हिम्मत खुलेआम स्वीकार करने की है। यह हमारे चरित्र में है, मैं आज बताना चाहता हूँ, जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री था, उस काल खंड में गुजरात की गोल्डन जुबली ईयर था। हमने गोल्डन जुबली मनाने में एक कार्यक्रम किया कि जितने भी महामहिम राज्यपाल के भाषण थे, गर्वनर के भाषण क्या होते हैं, जैसे महामहिम राष्ट्रपति का भाषण उस की सरकार की गतिनिधियों का उल्लेख करता है, महामहिम गर्वनर का भाषण उस राज्य की सरकार के किए गए कामों को बयान करता है। गुजरात बनने के बाद सरकारें कांग्रेस की रही थीं, लेकिन हमने जब से गुजरात बना तब से लेकर 50 साल की यात्रा में जितने महामहिम गवर्नर्स के भाषण थे, जिसमें सभी सरकारों का काम का ब्योरा था, उसका ग्रंथ बनाकर प्रेषित किया और उसे आर्काइव में रखने का काम किया।

इसको लोकतन्त्र कहते हैं। आप मेहरबानी करके, सब कुछ आपने ही किया है, आपके एक परिवार ने किया है, आपको वहां जाकर बैठने की नौबत आई है। ...(व्यवधान) आपने देश को स्वीकार नहीं किया है, इसलिए आज यह कारण है कि दोगुनी रफ्तार से सड़कें बन रही हैं, रेललाइनें तेज गति से आगे बढ़ी रहीं हैं, बहुत डेवलपमेंट हो रहा है, गैस पाइपलाइन बिछ रही है, बन्द पड़े फर्टिलाइजर प्लांट्स को खोलने का काम चल रहा है, करोड़ों घरों में शौचालय बन रहे हैं और रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। ...(व्यवधान) मैं कांग्रेस के मित्रों से पूछना चाहता हूँ ...(व्यवधान) रोजगारी और बेरोजगारी के आधार पर आलोचना करने वालों से मैं पूछना चाहता हूँ कि आप जब बेरोजगारी का आंकड़ा देते हैं, आप भी जानते हैं, देश भी जानता है, मैं भी जानता हूँ कि आप बेरोजगारी का आंकड़ा पूरे देश का देते हैं। ...(व्यवधान) अगर बेरोजगारी का आंकड़ा पोरे देश का हो तो रोजगारी का आंकड़ा भी पूरे देश का होना चाहिए। ...(व्यवधान) अब आपको हमारी बात पर भरोसा नहीं होगा। ...(व्यवधान) मैं कहना चाहता हूँ, आप रिकॉर्ड देख लीजिए। ...(व्यवधान) पश्चिम बंगाल की सरकार, कर्नाटक की सरकार, ओडिशा की सरकार और केरल की सरकार, हम तो हैं नहीं वहां, न तो एनडीए है, इन चार सरकारों ने स्वयं जो कोशिश की है, उस

हिसाब से पिछले तीन-चार वर्षों में इन चार सरकारों का दावा है कि वहाँ करीब-करीब एक करोड़ लोगों को रोजगार मिला है। ...(व्यवधान) क्या आप उनको भी इंकार करेंगे। ...(व्यवधान) क्या आप उस रोजगार को रोजगार नहीं मानेंगे? ...(व्यवधान) बेरोजगारी देश की और पूरे देश की रोजगारी का आंकड़ा ...(व्यवधान) मैं इसमें देश के आर्थिक रूप से समृद्ध राज्यों की चर्चा नहीं कर रहा हूँ, भाजपा की सरकारों की चर्चा नहीं कर रहा हूँ, एनडीए की सरकारों की चर्चा नहीं कर रहा हूँ, मैं उन सरकारों की चर्चा कर रहा हूँ, जहाँ सरकार में आपके लोग बैठे हैं और रोजगार देने के क्लेम वे कर रहे हैं। या तो आप इन्कार कर दीजिए कि आपकी कर्नाटक सरकार रोजगार के जो आंकड़े दे रही है,‘ झूठे’ आंकड़े दे रही है। ...(व्यवधान) इसलिए देश को गुमराह करने की कोशिश मत कीजिये और देश के ऐसे सभी राज्यों के रोजगार ...(व्यवधान) भारत सरकार ने जो प्रयास किया है, उसकी योजनाएँ और आप जानते हैं कि ईपीएफ में एक साल में 70 लाख नए नाम रजिस्टर हुए हैं और ये 18 से 25 साल के नौजवान हैं, बेटे-बेटियां हैं, उनके नाम जुड़े हैं। ...(व्यवधान) क्या यह रोजगार नहीं है? ...(व्यवधान) इतना ही नहीं, कोई डॉक्टर बने, कोई इंजीनियर बने, कोई लॉयर बने, कोई चार्टर्ड एकाउण्टेंट बने, कोई कंपनी सेक्रेटरी बने, कई लोगों ने अपने कारोबार प्रारम्भ किए, अपनी कंपनियों में लोगों को काम दिया, खुद का रोजगार बनाया। ...(व्यवधान) आप इसको गिनने को तैयायर नहीं हैं। ...(व्यवधान) आप भली-भांति जानते हैं कि फॉर्मल सेक्टर में सिर्फ दस प्रतिशत रोजगार होता है और इनफॉर्मल सैक्टर में 90 प्रतिशत होता हैं। ....(व्यवधान) इसलिए आज इनफॉर्मल सैक्टर को भी फॉर्मल सैक्टर में लाने के लिए हमने कई ऐसे इन्सेंटिव और योजनाएं बनाने की दिशा में सफलतापूर्वक प्रयास किया है। इतना ही नहीं, आज देश के मध्यम वर्गीय परिवार का नौजवान नौकरी की भीख मांगने वालों में से नहीं है, वह सम्मान से जीना चाहता है। वह अपने बलबूते पर जीना चाहता है। मैंने ऐसे कई आईएएस अफसर देखे हैं, मैं कभी उनसे पूछता हूँ कि आपकी संतान क्या करती है। मैं ज्यादातर सोचता हूँ कि शायद वे भी बाबू बनेंगे, लेकिन आजकल वे कहते हैं कि साहब, जमाना बदल गया। हमारे पिता जी के सामने थे तो

हम सरकारी नौकरी खोजते-खोजते यहाँ तक पहुँच गए, आज हम जब अपने बच्चों को कहते हैं कि बेटा यहाँ आ जाओ, तो वे मना करते हैं। वह कहता है कि मैं स्टार्ट-अप चालू करूंगा।

13 00 hrs

वह विदेश से पढ़कर आया है और बोलता है कि मैं स्टार्ट-अप चालू करूंगा, यह सब क्यों। देश के नौजवानों में यह ऐसपिरेशन है और भारत के नेतृत्व में कोई भी दल हो, देश का मध्यमवर्गीय तेज-तर्रार जो नौजवान है उनके ऐसपिरेशन को बल देना चाहिए, उनको निराश करने का काम नहीं करना चाहिए। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्किल डेवलपमेंट योजना, एंटप्रेन्योरशिप प्लानिंग योजना, ये सारी बातें देश के मध्यम वर्ग के ऊर्जावान नौजवानों को उस ऐसपिरेशन को बल देने के लिए हम प्रयास कर रहे हैं। उसी का परिणाम है कि प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत 10 करोड़ से ज्यादा लोन की स्वीकृति हुई है। यह आंकड़ा कम नहीं है और 10 करोड़ की लोन स्वीकृति में कहीं किसी की कट की हुई, बीच में कोई दलाल आया, उसकी कोई शिकायत नहीं है। यह भी तो इस सरकार के वर्क कल्चर का परिणाम है, हमने जो नीति-नियम बनाए हैं, उसी का परिणाम था कि उसको बिना कोई कारण के, बैंक में जाने पर धन मिल सकता है। 10 करोड़ लोन स्वीकृत हुई है, उसमें 4,00,000 करोड़ रुपये से ज्यादा पैसा दिया गया है। इतना ही नहीं, जो लोन प्राप्त लोग हैं, उनमें तीन करोड़ लोग बिल्कुल नए उद्यमी हैं, जिनके जीवन में कभी ऐसा अवसर नहीं आया, ऐसे लोग हैं, क्या यह भारत की रोजगारी बढ़ाने का काम नहीं हो रहा है, लेकिन आपने आंखें बंद करके रखी हैं और इसलिए आप अपने गीत गाने से ऊपर नहीं आ पा रहे हैं। यह मानसिकता आपको वहीं रहने देगी। अटलजी ने कहा है, वही सच्चाई है कि छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता और टूटे मन से कोई खड़ा नही होता और इसलिए आप वहीं रह जायेंगे और वहीं पर आपको गुजारा करना है।

मैं पूछना चाहता हूं कि ये सभी हमारे जमाने, हमारे जमाने के गीत गाते रहते हैं। अस्सी के दशक में हमारे देश में एक गूंज सुनाई दे रही थी कि 21वीं सदी आ रही है, 21वीं सदी आ रही है, 21वीं सदी आ रही है, उस समय ये कांग्रेस के नेता हर किसी को 21वीं सदी का पर्चा दिखाते रहते

थे। नौजवान नेता थे, नए-नए आए थे, अपने नाना से भी ज्यादा सीटें जीतकर आए थे और देश की जनता 21वीं सदी, 21वीं सदी, मैंने उस समय एक इंटरैस्टिंग कार्टून देखा था कि रेलवे प्लेटफॉर्म पर एक नौजवान खड़ा है और सामने से ट्रेन आ रही है। ट्रेन पर 21वीं शताब्दी लिखा था और यह नौजवान उस तरफ दौड़ रहा है तो एक बुजुर्ग ने कहा कि खड़े रहो, वह आने ही वाली है, तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं है। अस्सी के दशक में 21वीं सदी के सपने दिखाए जाते थे। सभी ओर 21वीं सदी के भाषण सुनाए जा रहे थे और 21वीं सदी की बात करने वाली सरकार इस देश में ऐवीएशन पॉलिसी तक नहीं ले पाई। अगर 21वीं सदी में ऐवीएशन पॉलिसी नहीं होगी तो आपने वह कैसी 21वीं सदी के बारे में सोचा – बैलगाड़ी वाली! आप यही कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदया, हमने एक ऐवीएशन पॉलिसी बनाई और आज छोटे-छोटे शहरों में जो छोटी-छोटी हवाई पट्टियाँ पड़ी हुई थीं, उनका हमने उपयोग किया और 16 नई हवाई पट्टियां, जहां जहाज आना-जाना शुरू हो गया, 80 से ज्यादा ऐवीएशन strips के लिए संभावनाएं पड़ी हुई हैं, उस पर हम काम कर रहे हैं। टायर-टू, टायर-थ्री इन शहरों में हवाई जहाज उड़ने वाले हैं। यह सुनकर उधर के सदस्यों को तकलीफ होगी कि आज देश में करीब साढ़े चार सौ हवाई जहाज ओपरेशनल हैं। आपको जानकर खुशी होगी कि यह हमारे इनीशिएटिव का परिणाम है कि इस वर्ष 900 से ज्यादा नए हवाई जहाज खरीदने के आर्डर हिंदुस्तान से गए हैं। यह सफलता इसीलिए ही नहीं मिली है कि हम सिर्फ निर्णय करते हैं, हम टेक्नोलोजी का भी भरपूर उपयोग करते हैं। हम मोनिटरिंग करते हैं। हम रेल और रोड़ के काम को ड्रोन से देख रहे हैं। हम सेटलाइट टेक्नोलोजी द्वारा ट्रैकिंग कर रहे हैं। सिर्फ इतना ही नहीं है, यदि टायलेट बनाया गया है, तो मोबाइल फोन पर उसकी तस्वीर टैग की जाती है। इस तरह से सेटलाइट टेक्नोलोजी का उपयोग करते हुए हर चीज को आगे बढ़ने का काम किया है। मोनिटरिंग के कारण काम में गति भी आई है और ट्रांसपेरेंसी को भी ताकत मिली है।

मुझे याद आता है जब हम चुनाव जीतकर आए, तब 'आधार' के बारे में आपकी तरफ से ही आशंका पैदा की गई थी कि मोदी 'आधार' को खत्म कर देगा। आपकी 'आधार' की योजना को मोदी पटक देगा। आप मानकर चले थे कि मोदी 'आधार' को आने नहीं देगा, इसलिए आपने हमला किया कि मोदी 'आधार' को नहीं लाएगा। लेकिन मोदी 'आधार' को वैज्ञानिक तरीके से लाया और उसके वैज्ञानिक उपयोग करने के रास्ते खोजे, जो आपकी कल्पना तक में नहीं थे।अब जब 'आधार' लागू हो गया और अच्छे ढंग से लागू हो गया, गरीब से गरीब व्यक्ति को उसका लाभ मिलने लगा, तो आपको 'आधार' का इम्प्लीमेंटेशन बुरा लगने लग गया। आप चाहतेहैं कि चित्त भी मेरी हो तथा पट भी मेरी हो। आज 115 करोड़ से ज्यादा 'आधार' बन चुके हैं। सरकार की करीब चार सौ योजनाएं डायरेक्ट बेनीफिट स्कीम से जुड़ी हैं और गरीबों के खाते में सीधे पैसे जाने लगे हैं। आपने ऐसी-ऐसी विधवाओं को पेंशन दी है, जिस बेटी का जन्म नहीं हुआ, वह कागज पर विधवा हो जाती है। सालों तक उन्हें पेंशन मिलती है और बीच में बिचौलिए मलाई खाते हैं। विधवाओं के नाम पर, बुजुर्गों के नाम पर, दिव्यांगों के नाम पर सरकारी खजाने से निकले पैसे बिचौलियों की जेब में गए हैं और राजनीति चलती रहती है। आज 'आधार' के कारण डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर से आप दुखी नहीं हैं, आपके दुख का कारण यह है कि जो बिचौलियों का जाल था, वह खत्म हो गया है। जो रोजगार गया है, वह बिचौलियों का गया है। जो रोजगार गया है, वह बेईमानों का गया है। जो रोजगार गया है, वह देश को लूटने वालों का गया है।

अध्यक्ष महोदया, चार करोड़ गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों को मुफ्त बिजली कनेक्शन देने की सौभाग्य योजना हम लाए हैं। आप कहेंगे कि लोगों के घरों में बिजली देने की योजना हमारे समय की है। हो सकता है, लेकिन क्या उस समय बिजली थी, क्या ट्रांसमिशन लाइनें थीं? 18 हजार गांवों में खम्भे तक नहीं लगे थे और लोग बिना बिजली के जीने को मजबूर हुए थे और आप कह रहे हैं कि यह हमारी योजना है। हम किसी भी डेवलपमेंट के लिए टुकड़ों में नहीं देखते हैं।

हम एक होलिस्टिक, इंटिग्रेटेड एप्रोच, दूरदृष्टि और दूरगामी परिणाम देने वाली योजना के साथ काम को आगे बढ़ाते हैं।

सिर्फ बिजली के विषय में मैं बताना चाहता हूँ। आपको पता चलेगा कि सरकार के काम करने का क्या तरीका है, बिजली व्यवस्था सुधारने के लिए हम किस तरीके से काम करते हैं। देश में कुल घर हैं 125 करोड़, जिनमें से चार करोड़ घरों में आज भी बिजली नहीं है, इसका मतलब है कि करीब-करीब 20 पर्सेंट लोग आज भी अंधेरे में जिन्दगी गुजार रहे हैं। यह गर्व करने जैसा विषय नहीं है। इसे आपने हमें विरासत में दिया है, जिसे पूरा करने का हम प्रयास कर रहे हैं। लेकिन इसे हम कैसे कर रहेहैं? हमने बिजली व्यवस्था सुधारने के लिए चार अलग-अलग चरणों में काम को हाथ में लिया है। एक, बिजली का उत्पादन, ट्रांसमिशन, डिस्ट्रिब्यूशन और चौथा है- कनेक्शन। ये सारे काम हम एक साथ आगे बढ़ा रहे हैं। सबसे पहले हमने बिजली का प्रोडक्शन बढ़ाने पर बल दिया है। सौर ऊर्जा, हाइड्रो ऊर्जा, थर्मल ऊर्जा, न्यूक्लियर ऊर्जा,आदि जिस क्षेत्र से भी बिजली का उत्पादन हो सकता है, उस पर बल देकर हमने बिजली का उत्पादन बढ़ाया है। ट्रांसमिशन नेटवर्क में हमने तेज गति से वृद्धि की। पिछले तीन सालों में, डेढ लाख करोड़ रुपये से अधिक प्रोजेक्ट्स पर काम किया गया। यह पिछली सरकार के आखिरी तीन वर्षों की तुलना में 83 पर्सेंट ज्यादा है। हमने स्वतंत्रता के बाद देश में कुल स्थापित ट्रांसमिशन लाइनों में, जिनमें वर्ष 2014 के बाद यानी आज़ादी के बाद अकेले हमने 31 पर्सेंट बढ़ाया है।

ट्रांसफॉर्मर कैपेसिटी पिछले तीन सालों में हमने बढ़ायी है। कश्मीर से कन्याकुमारी, कच्छ से कामरूप तक निर्बाध रूप से बिजली का ट्रांसमिशन करने के लिए नेटवर्क का सारा काम हमने खड़ा कर दिया है। पावर डिस्ट्रिब्यूशन सिस्टम को मजबूत करने के लिए वर्ष 2015 में उज्ज्वल डिसकॉम एश्योरेंस योजना यानी 'उदय' योजना की शुरुआत की गई है और राज्यों के साथ एमओयू करके इसे आगे बढ़ाया गया है। बिजली डिस्ट्रिब्यूशन कम्पनियों में बेहतर ऑपरेशन और फाइनेंशियल मैनेजमेंट सिस्टम स्थापित हो, हमने इस पर बल दिया है।

घर में बिजली पहुँचाने के लिए बिजली कनेक्शन के लिए 'सौभाग्य' योजना लांच की गयी है। एक तरफ बिजली पहुँचाने और दूसरी तरफ बिजली बचाने का काम किया गया है। हमने 28 करोड़ एलईडी बल्ब बांटे। मध्यम वर्गीय परिवार, जो घर में बिजली का उपयोग करता है, 28 करोड़ एलईडी बल्ब का उपयोग होने के कारण लगभग 15 हजार करोड़ रुपये मूल्य का बिजली का बिल बचा है, जो मध्यम वर्गीय परिवारों की जेब में गया है। इससे मध्यम वर्ग को लाभ हुआ है। हमने वेस्टेज ऑफ टाइम को भी बचाया है और वेस्टेज ऑफ मनी को भी रोकने के लिए ईमानदारी के प्रयास किये हैं।

महोदया, यहाँ पर किसानों के नाम पर राजनीति करने के भरपूर प्रयास चल रहे हैं और इनको मददगार लोग भी मिल जाते हैं। यह सच्चाई है कि आज़ादी के 70 वर्षों के बाद भी हमारे देश के किसान, जो फसलों का उत्पादन करते हैं, करीब-करीब एक लाख करोड़ रुपये के फल-फूल, सब्जी, अन्न, आदि को खेत से स्टोर तक और बाज़ार तक जो सप्लाई चेन चाहिए, उनमें कमी के कारण ये सम्पदाएँ बर्बाद हो जाती हैं। हमने प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजना शुरू की। हम उस इंफ्रास्ट्रक्चर पर बल दे रहे हैं कि किसान जो भी उत्पादन करता है, उनके लिए रखरखाव की व्यवस्था मिले। यह कम खर्च में मिले और उनकी फसल बर्बाद न हो। उनको इसकी गारंटी मिले।

सरकार ने सप्लायी चेन में नये इंफ्रास्ट्रक्चर को तैयार करने के लिए मदद करने का फैसला किया है। उसके बाद जो एक लाख करोड़ रुपये चाहिए, वह देश के किसानों को फूड प्रोसैसिंग में लगे हुए, मध्यम वर्ग के नौजवानों को गांवों में ही कृषि आधारित उद्योगों के लिए अवसर की संभावनाएं हमने पैदा की हैं।...(व्यवधान) हमारे देश में जितना कृषि का महत्व है, उतना ही पशुपालन का है। दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमारे देश में पशुपालन के क्षेत्र में आवश्यक प्रबंधन के अभाव में सालाना 40 हजार करोड़ रुपये का नुकसान होता है।...(व्यवधान) हमने पशुओं की चिंता करना, कामधेनु योजना के माध्यम से इन पशुओं के रखरखाव की चिंता करने के लिए, उनके आरोग्य की चिंता करने के लिए एक बड़ा एग्रेसिव काम शुरू किया है और उसके कारण कामधेनु

योजना का लाभ देश के पशुपालकों को और जो किसान पशुपालन करता है, उनको एक बहुत बड़ी राहत मिलने वाली है।...(व्यवधान) हम वर्ष 2022 तक किसानों की इनकम को दोगुना करने की बात करते हैं। वर्ष 1980 में 21वीं सदी की बात करना तो मंजूर था, लेकिन मोदी वर्ष 2018 में आजादी के 75 साल होने पर वर्ष 2022 में उसको याद करे, तो आपको उससे तकलीफ हो रही है कि मोदी वर्ष 2022 की बातें क्यों करता है।...(व्यवधान) आप वर्ष 1980 में 21वीं सदी के गीत गाते थे, देश को सपने दिखाते रहते थे। आज मेरी सरकार निर्धारित काम के साथ वर्ष 2022 में आजादी के 75 साल पर कोई काम करना चाहती है, जो हमारे लिए एक प्रेरणा है। उसको लेकर अगर काम कर रही है तो आपको उसमें भी तकलीफ हो रही है। ...(व्यवधान)

आप शंकाओं में इसलिए जीते कि आपने कभी बड़ा सोचा ही नहीं है और छोटे मन से कभी कुछ नहीं होता है। किसान की आय को दोगुना करने के लिए क्या हम उसकी लागत में कमी नहीं कर सकते हैं? ...(व्यवधान) सोइल हेल्थ कार्ड के द्वारा यह सम्भव हुआ है, सोलर पम्प के द्वारा यह सम्भव हुआ है, यूरिया नीम कोटिंग के कारण यह सम्भव हुआ है।...(व्यवधान) ये सभी काम किसान की लागत को कम करने के लिए हैं और ऐसी अनेक चीजों को हमने आगे बढ़ाया है। उसी प्रकार से किसान को खेती में रोजगार देने के लिए हमने बैम्बू को उगाने के लिए काम किया है।...(व्यवधान) अगर वह अपने खेत के किनारे बैम्बू लगाएगा तो बम्बू का एश्योर्ड मार्किट है। आज देश हजारों-करोड़ रुपयों का बैम्बू इम्पोर्ट करता है, यह आपकी एक गलत नीति के कारण है। ...(व्यवधान) आपने बैम्बू को ट्री कह दिया, पेड़ कह दिया, जिसके कारण कोई बैम्बू काट नहीं सकता था। मेरे नॉर्थ ईस्ट के लोग परेशान रहते थे।...(व्यवधान) हममें हिम्मत है कि हम बैम्बू को ग्रास की केटेगिरी में लेकर आए हैं। अपने खेत के किनारे पर अगर किसान बैम्बू लगाता है, उससे उसको कोई तकलीफ भी नहीं होगी और उससे उसको अतिरिक्त इनकम भी होगी।...(व्यवधान)

हम दूध के उत्पादन को बढ़ाना चाहते हैं। हमारे यहां प्रत्येक पशु के अनुपात पर कम दूध का उत्पादन होता है। उसको बढ़ाया जा सकता है।...(व्यवधान) हम मधुमक्खी पालन पर बल देना

चाहते हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि मधुमक्खी के पालन में करीब 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।...(व्यवधान) बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि आज दुनिया हॉलिस्टिक हेल्थ केयर और ईकोफ्रेंडली लिविंग पर बल दे रही है...(व्यवधान) इसलिए केमिकल वैक्स की जगह पर उसको बी-वैक्स चाहिए।आज पूरी दुनिया में बी-वैक्स का बहुत बड़ा मार्किट है और हमारा किसान खेती के साथ मधुमक्खी का पालन करेगा तो बी-वैक्स के कारण उसकी आय में बदलाव होगा।...(व्यवधान) हम यह भी जानते हैं कि मधुमक्खी फसल को उगाने में भी एक नयी ताकत देती है। अनेक ऐसे क्षेत्र हैं, दूध उत्पादन, पोल्ट्री फार्म, फिशरीज़, बाम्बू वैल्यू एडिशन इत्यादि । ये सारी चीजें किसान की आय को कवर करती हैं।...(व्यवधान)

जो लोग सोचते थे कि आधार कभी नहीं आएगा, आ गया। उनको यह भी परेशानी थी कि जीएसटी लागू नहीं हो पाएगा और हम सरकार को दबोचते रहेंगे। अब जीएसटी आ गया है, तो अब ये क्या करें? कोई नया खेल खेलो? ...(व्यवधान) ये खेल चल रहा है। कोई देश की राजनीतिक नेतागीरी देश को निराश करने का काम कभी नहीं करती है।...(व्यवधान)

लेकिन कुछ लोगों ने इस काम का रास्ता अपनाया है। आज सिर्फ जीएसटी के कारण लॉजिस्टिक में जो फायदा हुआ है, ...(व्यवधान) जितना समय उसका जाम व टोल टैक्स के कारण वेस्टेज जाता था, आज उसका वह समय बच गया और हमारे ट्रांस्पोर्टेशन को 60 परसेंट डिलीवरी की नई ताकत आयी है। जो काम वह 5-6 दिन में करता था, वह काम आज ढाई-तीन दिन में पूरा कर रहा है। यह देश को बहुत बड़ा फायदा हुआ है। हमारे देश में मध्यम वर्ग की भारत को आगे ले जाने में बहुत बड़ी भूमिका है। मध्यम वर्ग को निराश करने के लिए भ्रम फैलाने के प्रयास हो रहे हैं, 'झूठ' फैल रहा है। हमारे देश का मध्यम वर्ग का व्यक्ति गुड गवर्नेंस चाहता है, बेहतरीन व्यवस्थाएं चाहता है। वह अगर ट्रेन की टिकट ले तो उसके हक की सुविधाएं चाहता है, अगर वह कॉलेज में या स्कूल में बच्चे को पढ़ने के लिए भेजे तो उसके लिए अच्छी शिक्षा चाहता है, वह खाना खरीदने जाए तो खाने की क्वालिटी अच्छी हो, यह मध्यम वर्ग का व्यक्ति चाहता है और

सरकार का यह काम है कि पढ़ाई के बेहतर संसाधन, उचित मूल्य पर उसको घर उपलब्ध कराना, अच्छी सड़कें, ट्रान्सपोर्टेशन की बेहतर सुविधाएं, आधुनिक अर्बन इन्फ्रास्ट्रक्चर, मध्यम वर्ग की आशाओं एवं आकांक्षाओं के लिए और ईज़ ऑफ लिविंग के लिए यह सरकार कमर कसकर कार्य कर रही है। …(व्यवधान) लोग यह सुनकर हैरान हो जाएंगे कि दुनिया में एंट्री लेवल इनकम टैक्स 5 प्रतिशत की दर पर यदि कहीं है तो भारत में है। जो किसी समृद्ध देश में भी नहीं है, वह हमारे यहां है। पहले बजट में टैक्स से छूट की सीमा 50 हजार रुपये बढ़ाकर ढाई लाख रुपये कर दिया गया है। इस बार बजट में हमने 40 हजार रुपये का स्टैंडर्ड डिडक्शन मंजूर कर दिया है, सीनियर सिटिजन के लिए टैक्स में छूट का भी प्रावधान किया है, मध्यम वर्ग को करीब 12 हजार करोड़ रुपये का सालाना नया फायदा जुड़ता जाए, ऐसा काम हमारी सरकार ने किया है। प्रधान मंत्री शहरी आवास योजना में हमने 31 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च किया है। पहली बार इस देश में मध्यम वर्ग के लोगों को ब्याज में राहत देने का काम इस सरकार ने किया है। नए एम्स, नई आईआईटी, नए आईआईएम, 11 बड़े शहरों में मेट्रो और 32 लाख से ज्यादा स्ट्रीट लाइट एलईडी की व्यवस्था कर दी गई है। एमएसएमई से कोई इन्कार नहीं कर सकता, एमएसएमई क्षेत्र के साथ जुड़े मध्यम वर्ग और उच्च मध्यम वर्ग के लोगों के लिए ढाई सौ करोड़ रुपये के टर्नओवर पर टैक्स रेट 30 परसेंट से कम, 25 परसेंट करके मध्यम वर्ग के समाज की बहुत बड़ी सेवा की है । 5 प्रतिशत दिया है । दो करोड़ रुपये तक कारोबार करने वाले सभी व्यापारियों को केवल बैंकिंग के लोन के माध्यम से लेन देन करते हैं, सरकार उनकी आय को टर्नओवर का 8 प्रतिशत नहीं मानकर 6 प्रतिशत मानती है। यानि उन्हें टैक्स में दो प्रतिशत का लाभ होगा ।

जीएसटी में डेढ़ करोड़ तक का टर्नओवर करने वाले कारोबार को कंपोजीशन स्कीम दी गई और टर्नओवर का केवल 1 प्रतिशत भुगतान दुनिया में सबसे कम हिन्दुस्तान में करने वाली यह सरकार है ।

माननीय अध्यक्ष महोदया, जनधन योजना के तहत 31 हजार करोड़ से ज्यादा गरीबों के बैंक अकाउण्ट्स खोले, 18 करोड़ से ज्यादा गरीबों को स्वास्थ्य व सुरक्षा बीमा योजना का लाभ हो, 90 पैसे प्रतिदिन या एक रुपया महीना, इतना अच्छा बीमा हमने देश के गरीबों को दिया। आपको यह जानकर संतोष होगा कि इतने कम समय में गरीब परिवारों को कोई आफत आयी तो इंश्योरेंस की योजना के कारण ऐसे परिवारों के घर में दो हजार करोड़ रुपये पहुंच गया है । अध्यक्ष महोदया, यह असामान्य काम हुआ है। ...(व्यवधान) उज्जवला योजना के तहत तीन करोड़ तीस लाख माँ-बहनों को, गरीब माँ-बहन, गैस के कनैक्शनों के लिए ये एमपीओं के कुर्ते पकड़कर चलना पड़ता था, अब हम सामने से जाकर गैस कनैक्शन दे रहे हैं। ...(व्यवधान) अब वह संख्या हमने आठ करोड़ करने का निर्णय लिया है। ...(व्यवधान)

महोदया, आयुष्मान भारत योजना... मैं हैरान हूँ कि क्या देश के गरीब को स्वास्थ सुविधा मिलनी चाहिए कि नहीं मिलनी चाहिए? ...(व्यवधान) गरीब पैसों के अभाव में इलाज करवाने नहीं जाता है। ...(व्यवधान) वह मृत्यु को पसंद करता है, लेकिन बच्चों के लिए वह कर्ज छोड़कर जाना नहीं चाहता है। ...(व्यवधान) क्या ऐसे गरीब, निम्न मध्यम वर्गीय परिवारों की रक्षा करने का निर्णय गलत हो सकता है? ...(व्यवधान) हाँ आपको लगता है कि इस प्रोडक्ट में कोई बदलाव करना है, अच्छे पॉज़िटिव सुधार लेकर आइए, मैं स्वयं समय देने के लिए तैयार हूँ ताकि देश के गरीबों के लिए पांच लाख रुपये तक सालाना खर्च करें, उसके काम सरकार आएगी ...(व्यवधान) लेकिन आप उसके लिए भी इस प्रकार की बयानबाजी कर रहे हैं।...(व्यवधान) यह अच्छी योजना है, आप जरूर मुझे अपने सुझाव दीजिए । ...(व्यवधान) हम मिल-बैठकर के नक्की करेंगे, तय करेंगे । ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, हमारी सरकार ने जो कदम उठाए हैं, उसने जमात के भी सोचने के तौर-तरीके में बदलाव किया है। ...(व्यवधान) जन-धन योजना ने गरीब का आत्मविश्वास बढ़ाया है। ...(व्यवधान) गरीब बैंक में पैसे जमा कर रहा है, रुपये डेबिट कार्ड उपयोग कर रहा है।

...(व्यवधान) वह भी अपने आपको समृद्ध परिवारों की बराबरी का देखने लगा है। ...(व्यवधान) स्वच्छ भारत मिशन ने महिलाओं के अंदर एक बहुत बड़ा आत्मविश्वास पैदा करने का काम किया। ...(व्यवधान) अनेक प्रकार की पीड़ाओं से उसको मुक्ति देने का कारण बनाहै। ...(व्यवधान) उज्ज्वला योजना गरीब माताओं को धुएँ से मुक्ति दिलाने का कारण बना है। ...(व्यवधान) पहले हमारा श्रमिक या तो अच्छी नौकरी पाने के लिए पुरानी नौकरी छोड़ने की हिम्मत नहीं कर पाता था क्योंकि पुराने जमा पैसे डूब जाएंगे। ...(व्यवधान) अब हमने उसके अनक्लेम्ड 27 हज़ार करोड़ रुपये यूनिवर्सल अकाउंट नंबर देकर, उस तक पहुंचाने का काम किया है। ...(व्यवधान) आगे गरीब मज़दूर जहां जाएगा तो उसका बैंक अकाउंट भी साथ-साथ चलता जाएगा। ...(व्यवधान) हमने यह काम किया है।

महोदया, भ्रष्टाचार और काले धन की बात करना चाहूंगा। ...(व्यवधान) अभी भी आपको रात को नींद नहीं आती है। ...(व्यवधान) मैं आपकी बेचैनी जानता हूँ। ...(व्यवधान) भ्रष्टाचार के कारण जमानत पर जीने वाले लोग भ्रष्टाचार के कामों से बचने वाले नहीं हैं। ...(व्यवधान) कोई भी बचने वाला नहीं है। ...(व्यवधान) यह इस देश में पहली बार हुआ है कि चार-चार पूर्व मुख्यमंत्रियों को भारत की न्यायपालिका ने दोषी घोषित कर दिया है और उनको जेल में जिंदगी गुजारने के लिए मजबूर होना पड़ा है। ...(व्यवधान) यह हमारा कमिटमेंट था। ...(व्यवधान) जिन्होंने देश को लूटा है, उनको देश को वापस लौटाना पड़ेगा। ...(व्यवधान) इस काम में मैं कभी पीछे हटने वाला नहीं हूँ। ...(व्यवधान) यह मेरा आर्टिकल ऑफ फेथ है। ...(व्यवधान) मैं लड़ने वाला इंसान हूँ। ...(व्यवधान) इसलिए आज देश में एक ईमानदारी का माहौल बना है। ...(व्यवधान) एक ईमानदारी का उत्सव है। ...(व्यवधान) अधिक लोग आज आगे आ रहे हैं। ...(व्यवधान) इनकम टैक्स को देने के लिए आगे आ रहे हैं। ...(व्यवधान) उनको भरोसा है कि शासन के पास, खजाने में जो पैसा जाएगा, उसकी पाई-पाई का हिसाब मिलेगा और उसका सही उपयोग होगा। ...(व्यवधान) यह काम हो रहा है। ...(व्यवधान)

महोदया, आज मैं एक विषय को ज़रा विस्तार से कहना चाहता हूँ। …(व्यवधान) कुछ लोगों को विश्वास है कि 'झूठ' बोलो, जोर से 'झूठ' बोलो, बार-बार 'झूठ' बोलो और यह फैशन हो गया है। …(व्यवधान) हमारे वित्त मंत्री ने बार-बार इस बात को कहा है, तब भी उनकी मदद करने वाले, चाहने वाले लोग सत्य को दबा देते हैं और 'झूठ' बोलने वाले लोग चौराहे पर खड़े होकर जोरों से 'झूठ' बोलते रहते हैं। …(व्यवधान) वह मसला एनपीए का है। …(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से, इस सदन के माध्यम से आज देश को कहना चाहता हूँ कि आखिर एनपीए का मामला है क्या, देश को पता चलना चाहिए कि एनपीए के पीछे ये पुरानी सरकार के कारोबा रहें और शत-प्रतिशत पुरानी सरकार जिम्मेवार है।…(व्यवधान) एक प्रतिशत भी कोई और नहीं है।…(व्यवधान) आप देखिए उन्होंने ऐसी बैंकिंग नीतियाँ बनायीं कि जिसमें बैंकों पर दबाव डाले गये।…(व्यवधान) टेलीफोन जाते थे, अपने चहेतों को लोन मिलता था। वे लोन का पैसा नहीं दे पा रहे थे।…(व्यवधान) बैंक, नेता, सरकार, बिचौलिये मिल करके उसका रीस्ट्रक्चर करते थे।…(व्यवधान) बैंक से गया पैसा कभी बैंक में आता नहीं था।…(व्यवधान) कागज पर आता-जाता, आता-जाता चल रहा था और देश 'लूटा' जा रहा था।…(व्यवधान) उन्होंने अरबों-खरबों रुपया दे दिया।…(व्यवधान) हमने बाद में आकर के, आते ही हमारे ध्यान में यह विषय आया।…(व्यवधान) अगर मुझे राजनीति करनी होती तो मैं पहले ही दिन देश के सामने वे सारे तथ्य रख देता, लेकिन ऐसे समय बैंकों की इस दुर्दशा की बात देश के अर्थतंत्र को तबाह कर देती।…(व्यवधान) देश में एक ऐसा संकट का माहौल आ जाता, जिससे निकलना मुश्किल हो जाता और इसलिए आपके पापों को देखते हुए, जानते हुए, सबूत होते हुए भी मैंने मौन रखा, मेरे देश की भलाई के लिए।…(व्यवधान) आपके आरोप मैं सहता रहा, देश की भलाई के लिए, लेकिन अब, बैंकों को हमने आवश्यक ताकत दी है।…(व्यवधान) अब समय आ गया है कि देश के सामने सत्य आना चाहिए।…(व्यवधान) यह एनपीए आपका पाप था और मैं आज इस पवित्र सदन में खड़ा रहकर कह रहा हूँ, मैं लोकतंत्र के मंदिर में खड़ा रहकर कह रहा हूँ कि हमारी सरकार आने के बाद एक भी ऐसा लोन हमने नहीं दिया है, जिसको एनपीए की नौबत आयी हो।…(व्यवधान) आपने

छुपाया, आपने क्या किया, आपने आँकड़े गलत दिए ।...(व्यवधान) जब तक आप थे, आपने बताया कि स्ट्रेस्ड एसेट का 36 परसेंट है ।...(व्यवधान) हमने जब देखा और वर्ष 2014 में हमने कहा कि 'झूठ' नहीं चलेगा, सच चलेगा, जो होगा देखा जायेगा और जब सारे कागजात खंगालना शुरू किया तो वह जो आपने देश को बताया था, वह गलत आँकड़ा था।...(व्यवधान) स्ट्रेस्ड एसेट का 82 परसेंट एनपीए था।...(व्यवधान) मार्च, 2008 में बैंकों द्वारा दिया गया कुल एडवांस 18 लाख करोड़ रुपये और छ: साल में आप देखिए क्या हाल हो गया, वर्ष 2008 में 18 लाख करोड़ और आप जब तक मार्च, 2014 तक बैठे थे, यह 18 लाख करोड़ 52 लाख करोड़ रुपया पहुँच गया, जो देश के गरीब का पैसा आपने लुटा दिया।...(व्यवधान) आप लगातार रीस्ट्रक्चर करते रहे।...(व्यवधान) कागज पर लोन आ गया, लोन दे दिया, लोन आ गया, लोन दे दिया, आप ऐसे ही उनको बचाते रहे, क्योंकि बीच में बिचौलिये थे, क्योंकि वे आपके चहेते थे, क्योंकि आपका कोई न कोई उसमें हित सधा हुआ था और इसलिए आपने यह काम किया ।...(व्यवधान) हमने तय किया कि जो भी तकलीफ होगी, सहेंगे, लेकिन साफ-सफा और मेरा स्वच्छता अभियान सिर्फ चौराहे तक नहीं है, मेरा स्वच्छता अभियान इस देश के नागरिकों के हक के लिए इन आचार-विचार में भी है और इसलिए हमने इस काम को किया है ।

हमने योजना बनाई, चार साल लगे रहे। हमने रि-कैपिटलाइजेशन पर काम किया है। हमने दुनिया भर के अनुभवों का अध्ययन किया है और देश के बैंकिंग सेक्टर को ताकत भी दी है। उसे ताकत देने के बाद मैं चार साल आपके 'झूठ' को झेलता रहा और आज मैं देश के सामने पहली बार यह जानकारी दे रहा हूं। 18 लाख करोड़ रुपये से 52 लाख करोड़ रुपये आपने लुटा दिए।आज जो इसमें पैसे बढ़ रहे हैं, वह उस समय के आपके पाप का ब्याज है। ये हमारी सरकार के दिए हुए पैसे नहीं हैं। यह जो आंकड़ा बढ़ रहा है, उस 52 लाख करोड़ रुपये पर जो ब्याज लग रहा है, यह उसका है। देश कभी आपको इस पाप के लिए माफ नहीं करेगा ।...(व्यवधान) कभी-न-कभी तो इन चीज़ों का हिसाब आपको देश को देना पड़ेगा ।...(व्यवधान)

मैं देख रहा हूं कि हिट-एण्ड-रन वाली राजनीति चल रही है। कीचड़ फेंको और भाग जाओ, कीचड़ फेंको और भाग जाओ।जितना कीचड़ उछालोगे, कमल उतना ही ज्यादा खिलने वाला है। इसे और उछालो, जितना उछालना है, उछालो ।…(व्यवधान)

अब इसमें मैं कोई आरोप नहीं लगाना चाहता। लेकिन, देश इसे तय करेगा कि यह क्या है। आपने कतर से गैस लेने का बीस सालों का कॉन्ट्रैक्ट किया था। जिस दाम से आपने गैस लेने का कॉन्ट्रैक्ट किया था, हमने आकर उसके संबंध में कतर से बात की। हमने अपना पक्ष रखा।भारत सरकार उससे बंधी हुई थी। आप जो सौदा कर गए थे, हमें उसे निभाना था, क्योंकि किसी देश की सरकार की अपनी एक विश्वस्तता होती है। लेकिन, हमने उन्हें तथ्यों के सामने रखा। हमने उन्हें कन्वींस किया और मेरे देशवासियों को खुशी होगी। अध्यक्ष महोदया, इस पवित्र सदन में मुझे यह कहते हुए संतोष हो रहा है कि हमने कतर से रि-नेगोसिएशन किया और गैस की जो हम खरीद करते थे, उसमें हमने देश के करीब आठ हजार करोड़ रुपये बचाए ।…(व्यवधान) आपने आठ हजार करोड़ रुपये ज्यादा दिए थे।इसे क्यों दिया, किसके लिए दिया, कैसे दिया, क्या इसके साथ सवालिया निशान खड़े हो सकते हैं, इसे देश तय करेगा, इसमें मुझे नहीं कहना है ।…(व्यवधान)

मैं यह भी कहना चाहूंगा कि गैस के लिए ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत सरकार का एक सौदा हुआ था। गैस उनसे लिया जाता था। हमने उनसे भी नेगोसिएशन किया, लम्बे समय का किया और आपने ऐसा क्यों नहीं किया, हमने चार हजार करोड़ रुपये उसमें भी बचाए।…(व्यवधान) देश के हक़ का पैसा हमने बचाया । इसे क्यों दिया, किसने दिया, कब दिया, किसके लिए दिया, किस हेतु से दिया, इन सारे सवालों के जवाब आप तो कभी देंगे नहीं, मुझे मालूम है। देश की जनता जवाब मांगने वाली है।…(व्यवधान)

एक छोटा-सा विषय है – एल.ई.डी. बल्ब । कोई मुझे बताए कि क्या कारण था कि आपके समय वह बल्ब 300-350 रुपये में बिकता था । भारत सरकार उसे 300-350 रुपये में खरीदती थी। इसका क्या कारण है कि वही बल्ब, उसकी टेक्नोलॉजी में कोई फर्क नहीं, उसकी क्वालिटी में

भी कोई फर्क नहीं, देने वाली कम्पनी वही, पर, 350 रुपये का बल्ब अब 40 रुपये में कैसे आ रहा है? …(व्यवधान) इसके बारे में ज़रा आपको कहना पड़ेगा, आपको जवाब देना पड़ेगा।…(व्यवधान)

आप मुझे बताइए कि क्या कारण है कि आपके समय में सोलर पावर बारह रुपये, तेरहरुपये, चौदह रुपये, पन्द्रह रुपये प्रति यूनिट थी। 'लूटो', जिसको भी 'लूटना' है, 'लूटो', बस हमारा ख्याल रखो, इसी मंत्र को लेकर चला गया। पर, आज वही सोलर पावर दो रुपये, तीन रुपये प्रति यूनिट के बीच आ गया है।…(व्यवधान) लेकिन, इसके बावजूद भी मैं आप पर भ्रष्टाचार के आरोप नहीं लगाता हूं, देश को उसमें जो लगाना है, लगाएगा, उसमें मैं अपने आपको संयमित रखना चाहता हूं।…(व्यवधान) लेकिन यह हक़ीकत बोल रही है कि क्या हो रहा था ?…(व्यवधान)

आज विश्व में भारत का मान-सम्मान बढ़ा है, भारत के पासपोर्ट की ताकत सारी दुनिया में बड़ी है, जहाँ भी हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तान का पासपोर्ट लेकर जाता है, वह आँखे ऊँची करके गर्व के साथ देखता है…(व्यवधान) आपको शर्म आती है, आप विदेशों में जाकर देश की तस्वीर गलत तरीके से पेश कर रहे हो।…(व्यवधान) जब देश डोकलाम की लड़ाई लड़ रहा था और वहाँ खड़ा था, तो आप चीन के लोगों से बात कर रहे थे।…(व्यवधान) आपको याद होना चाहिए, संसदीय प्रणाली, लोकतंत्र तथा देश के प्रति विपक्ष की एक जिम्मेवारी होती है।…(व्यवधान) जब शिमला करार हुआ, श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने जुल्फिकार भुट्टो जी के साथ करार किया, हमारी पार्टी का इकरार था, लेकिन इतिहास गवाह है कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इंदिरा जी से समय माँगा, उनसे मिलने भी गए और उनको बताया कि देश हित में यह गलत हो रहा है।…(व्यवधान) हम उससे बाहर आकर के उस समय देश का कोई नुकसान नहीं होने दिया था।…(व्यवधान) देश के प्रति हमारी जिम्मेदारी होती है। जब हमारे सेना के जवान सर्जिकल स्ट्राइक करते हैं, तो आप सवालिया निशान खड़ा करते हैं ।…(व्यवधान)

इस देश में एक कॉमनवेल्थ गेम हुआ, अभी भी कैसी-कैसी चीजें लोगों के मन में सवालिया निशान बनी हुई है।…(व्यवधान) इस सरकार के आने के बाद 54 देशों का इंडिया-अफ्रीका समिट

हुआ, ब्रिक्स समिट हुआ, फीफा अंडर-17 का वर्ल्ड कप हुआ,…(व्यवधान) इतनी बड़ी-बड़ी आयोजनाएँ हुई, अभी 26 जनवरी को आसियान के 10 देशों के मुखिया आकर बैठे थे और मेरा तिरंगा लहरा रहाथा।…(व्यवधान) आपने कभी सोचा नहीं था, जिस दिन इस नयी सरकार का शपथ हुआ और सार्क देशों के मुखिया आकर बैठ गए तो आपके मन में सवाल था कि 70 साल में हमें क्यों नहीं समझ में आया।…(व्यवधान) छोटा मन बड़ी बात नहीं कर सकता है।

अध्यक्ष महोदया, देश एक न्यू इंडिया का सपना लेकर आगे बढ़ना चाहता है। महात्मा गांधी जी ने यंग इंडिया की बात कही थी, स्वामी विवेकानंद जी ने नये भारत की बात कही थी, हमारे पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी जी जब पद पर थे तो नये भारत का सपना सबके सामने रखा था।…(व्यवधान) आइए, हम सब मिलकर नये भारत बनाने के संकल्प को पूर्ण करने के लिए अपनी जिम्मेवारियों को निर्वाह करें।…(व्यवधान) लोकतंत्र में आलोचनाएं लोकतंत्र की ताकत हैं, ये होनी चाहिए, तभी तो अमृत निकलता है।…(व्यवधान) लेकिन लोकतंत्र झूठे आरोप करने का अधिकार नहीं देता है, अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने के लिए देश को निराश करने का हक नहीं देता है।…(व्यवधान) इसलिए मैं आशा करता हूँ कि राष्ट्रपतिजी के अभिभाषण पर बोलने वालों ने बोल लिया, अब जरा आराम से उसको पढ़ें, पहली बार पढ़ने में समझ नहीं आए तो दुबारा पढ़ें।…(व्यवधान) भाषा समझ नहीं आयी हो तो किसी की मदद ले लें, लेकिन जो ब्लैक एंड ह्वाइट में सत्य लिखा गया है, उसको नकारने का काम न करें, इसी अपेक्षा के साथ राष्ट्रपतिजी के अभिभाषण पर जिन-जिन माननीय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं, मैं उनका अभिनंदन करता हूँ, धन्यवाद करता हूँ।…(व्यवधान)

अब मैं सबको कहता हूँ कि सर्वसम्मति से राष्ट्रपतिजी के अभिभाषण को स्वीकार करें।…(व्यवधान) इसी एक अपेक्षा के साथ, आपने जो समय दिया, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। धन्यवाद।…(व्यवधान)